Dr. Girija Uraon
Associat professor
Depatt of psychology
Rohtas mahila college, Sasaram

Date: / /
Page No.:

B. A. part - II paper III Group A

परिकल्पना के निर्माण के समय सोच-विचार या सावधानियाँ Considerations or precautions while formulating hypotheses)

प्रश्न है कि परिकल्पना बनाते समय शोधकर्ता या अनुसंधान कर्ता (investegator) को किन-2 बातो पर ध्यान रखना चाहिए अथवा किन-2 सावधानियों को बरतना चाहिए। इस संबंध में शोधरीति-विधान (methodology) के विशेषज्ञों (experts) ने efvecveefueefkele yeeleew keaeGuueske efkeaoee Nw:-

1. निश्चयात्मक कथन (assertive statement):- परिकल्पना बनाते समय शोधकर्ता को चाहिए कि वह इस बात का ध्यान रखे कि परिकल्पना प्रश्न के रूप में न हो बल्कि कथन के रूप में हो। इस निश्चयात्मक कथन के रूप में होना चाहिए। जैसे "कथन से उपादन घटता है।" "बुद्धि तथा सर्जनात्मकता में धनात्मक संबंध होता है।" ये सभी निश्चयात्मक कथन के उदाहरण हैं। अतः अनुसंधानकर्ता को सावधानी बरतनी चाहिए कि परिकल्पना इसी तरह के निश्चयात्मक कथन के रूप में हो।

2. स्वीकारात्मक कथन (affirmative statement):-

Scanned with CamScanner

शोधकर्ता को इस बात पर ध्यान रखना चाहिए कि परिकल्पना का कथन न केवल निश्चयात्मक हो बल्कि स्वीकारात्मक भी हो। ऊपर के उदाहरण में सभी कथन निश्चयात्मक होने के साथ-2 स्वीकारात्मक भी हो।

(3.) स्पष्टता एवं असंदिग्धता (clarity and unambiguity):- शोधकर्ता को चाहिए कि वह कथन की स्पष्टता तथा असंदिग्धता को ध्यान में रखें। वह परिकल्पना ऐसे कथन में प्रस्तुत करे जो स्पष्ट हो। दूसरे शब्दों में कथन ऐसा हो जिसका अर्थ सबों के लिए एक ही हो।

(4.) मध्यम लम्बाई (Moderate Lenght):- परिकल्पना बनाते समय यह भी ध्यान रखना चाहिए कि कथन न तो बहुत लम्बा हो और न बहुत छोटा हो बल्कि मध्यम हो। बहुत लम्बा या बहुत छोटे वाक्य के अर्थ को ही-2 समझना कठिन हो जाता है। मध्यम वाक्य को समझना अपेक्षाकृत सरल होता है। अतः शोधकर्ता को यह सावधानी बरतनी होगी कि कथन की लम्बाई मध्यम हो।

(5.) तथ्य कथन (fact Statement):- शोधकर्ता या अनुसंधानकर्ता को चाहिए कि वह परिकल्पना की रचना केवल तथ्य के रूप में करे, मूल्य कथन (value statement) के रूप में नहीं।

(6.) तटस्थ शब्द (Neutral words):- परिकल्पना में यथासंभव तटस्थ शब्दों का उपयोग करना चाहिए और संवेगात्मक शब्दों तथा भावुक शब्दों sentimental words से बचना चाहिए। कथन में ऐसे शब्दों का व्यवहार नहीं करना चाहिए जिससे किसी के संवेग या मनोभाव को ठेस पहुँचे।

Scanned with CamScanner